

डॉ. मार्व विल्सन, भविष्यवक्ता, सत्र 27, यशायाह, चुनिंदा अंश, भाग 2

© 2024 मार्व विल्सन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. मार्व विल्सन द्वारा भविष्यवक्ताओं पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 27, यशायाह के चुनिंदा अंश, भाग 2 है।

ठीक है, आइए प्रार्थना के एक शब्द से शुरू करें, कृपया। आप इस पूरे सप्ताह हमारे साथ रहे हैं।

हम आपको इसके लिए धन्यवाद देते हैं हमारे पिता, कि हर दिन हम इस तथ्य का जश्न मना सकते हैं कि आपने हमें रात भर साथ दिया है और हमें आपके लिए जीने के लिए यह दिन दिया है। आपका धन्यवाद कि आपने हमें आस्था की समग्र समझ दी है, कि हमारा विश्वास कोई स्विच नहीं है जिसे हम बंद और चालू करते हैं, बल्कि यह हर दिन आपके साथ एक व्यापक यात्रा है क्योंकि हम आपके बारे में सोचते हैं और हर समय और हर जगह आपको सबसे पहले रखने की कोशिश करते हैं, हर स्थिति में अपने जीवन में आपका और आपकी शक्ति का लाभ उठाते हैं। आपका धन्यवाद कि आप सभी जीवन के ईश्वर हैं।

आप जीवन के सभी क्षेत्रों, सभी क्षेत्रों पर अपना दावा करते हैं, जिनमें आप हमें शामिल करने के लिए कहते हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारा अनुभव भी ऐसा ही हो। भविष्यवक्ता यशायाह के लिए आपका धन्यवाद।

इस्राएल के भविष्यवक्ताओं को अपनी पीढ़ी के साथ बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, फिर भी हम बहुत ही कठिन समय में काम करते हुए परमेश्वर को देख सकते हैं। इसलिए, हम उसमें आशा और प्रोत्साहन पा सकते हैं। आज हम जो अध्ययन करते हैं, उसे समझने में हमारी सहायता करें, मैं हमारे प्रभु मसीह के माध्यम से प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

ठीक है, मैंने यशायाह के आदेश के लिए तीन-बिंदु वाली व्यापक रूपरेखा सुझाई। सरल शब्दों में, पहले चार छंदों में, वह प्रभु को देखता है।

पद 5-8 में वह आत्मनिरीक्षण करता है और खुद को देखता है। फिर पद 9-13 में उसे एक आदेश मिलता है और फिर वह दुनिया को देखता है।

और इसलिए प्रभु के साथ यह मुलाकात उसके भीतर और उसकी अपनी स्थिति, उसकी योग्यता की कमी के बारे में चिंतन की ओर ले जाती है, जो कि वास्तव में प्रभु को चाहिए। और फिर वह नियुक्त होने, शुद्ध होने में सक्षम होता है। वास्तव में, जब आप इस दूसरे भाग को देखते हैं जिसे हमने अभी पूरा किया है, हमारे पिछले व्याख्यान में श्लोक 5-8, खुद को देखते हुए, उसे यह विश्वास होता है: हाय मुझ पर, मैं असफल हो गया।

वह यह स्वीकार करता है: मैं अशुद्ध होठों वाला व्यक्ति हूँ। वह परमेश्वर की सफाई का अनुभव करता है। वह कहता है, मेरा पाप शुद्ध हो गया है।

और फिर वह पवित्र हो जाता है। मैं यहाँ हूँ, मुझे वह भेजो जो इस दिलचस्प हिब्रू शब्द, हिन से शुरू होता है।

हिनी एक तरह से ध्यान आकर्षित करने वाली अभिव्यक्ति है। हम इसे अब्राहम के महान अकेदा अध्याय, उत्पत्ति के 22वें अध्याय में कई बार पढ़ते हैं। मैं यहाँ हूँ, या यह मैं हूँ, या देखो, मैं सुन रहा हूँ।

यह एक अभिव्यक्ति है, एक बहुत ही मुहावरेदार अभिव्यक्ति, जो अपने साथ यह विचार लेकर आती है, मैं तैयार हूँ, मैं तैयार हूँ, मैं सुन रहा हूँ, मुझे मेरा अगला निर्देश दीजिए। मैं आगे बढ़ने के लिए तैयार हूँ। और इसलिए यह अंश हमें कारण बताता है कि लोग भगवान की सेवा क्यों करते हैं।

जब वे अपनी मानवता और पापपूर्णता से निपटते हैं, तब वे यह समझने की स्थिति में होते हैं कि मानवीय शक्ति से सेवकाई नहीं की जा सकती। और इससे भी बढ़कर, भविष्यवक्ता इसका एक उदाहरण हैं, परमेश्वर के प्रवक्ता के रूप में। जब हम तीसरे मुख्य भाग को देखते हैं, जो 9 से 13 तक शुरू होता है, तो उसे अपने शब्द मिलते हैं: जाओ और इस व्यक्ति को बताओ।

और इसलिए, अब उनके मंत्रालय का उद्देश्य प्रकट होने जा रहा है, और यह काफी हद तक नकारात्मक शब्दों में है। मूल रूप से, उनका श्रम निष्फल होने जा रहा है। यह हाई स्कूल या कॉलेज स्नातक स्तर पर बहुत बड़ा नहीं होगा।

आप दुनिया में असफल होने के लिए जा रहे हैं। भगवान आपका भला करे। यहाँ की भाषा पर ध्यान दें।

वह भविष्यवक्ता से कहता है, जाओ और इन लोगों से कहो। इस लोगों की तुलना इस भविष्यवाणी में कई जगहों से की जानी चाहिए, यह जकेल और यिर्मयाह से भी, जहाँ अमी, मेरे लोग, शब्द का इस्तेमाल किया गया है। यह प्रेमपूर्ण स्नेह का शब्द है।

ये मेरे लोग हैं। ये इन लोगों को बताने जा रहा हूँ। ये एक तरह से बड़ी छड़ी वाला दृष्टिकोण है।

हम अध्याय 1 से जानते हैं, जिस पर मैं यहाँ थोड़ी देर में चर्चा करूँगा, कि वे ऐसे लोग थे जिन्हें सुधार की आवश्यकता थी। इसलिए, यहाँ वह अपने साथी देशवासियों के लिए अपनी खुशी और घृणा व्यक्त कर रहा है। अब, आगे जो कुछ है वह शास्त्र के दिलचस्प chiasms में से एक है।

याद रखें, एक चियास्म, एक ABBA संरचना, जहाँ पहला और अंतिम तत्व समान हैं, और दूसरा और तीसरा समान हैं। सब्त मनुष्य के लिए बनाया गया था, न कि मनुष्य सब्त के लिए। जब मुश्किलें आती हैं, तो मुश्किलें आगे बढ़ती हैं।

परंपरा जीवित लोगों का मृत विश्वास नहीं है, यह मृतकों का जीवित विश्वास है। अब्बा। अब, यहाँ आपके पास वास्तव में छह तत्वों वाला एक चियास्म है, न कि चार, जो शास्त्रों में अधिक सामान्य है।

मैंने हाल ही में पिछले व्याख्यान में इसका उल्लेख किया था जब हमने काव्य शैली के बारे में थोड़ा सा कहा था। और इस विशेष अंश में, श्लोक 9 और 10 में, वह कहते हैं, हमेशा सुनते रहो, लेकिन कभी समझो मत। हमेशा देखते रहो, लेकिन कभी अनुभव मत करो।

इन लोगों के दिलों को कठोर बनाओ। उनके कानों को सुस्त बनाओ, और उनकी आँखें बंद करो, अन्यथा वे अपनी आँखों से देख सकते हैं, अपने कानों से सुन सकते हैं, और अपने दिलों से समझ सकते हैं। तो, यहाँ की भाषा हमें इस विरोधाभासी तरह की बात बताती है कि पैगंबर किस तरह से शामिल होने जा रहे हैं, जहाँ वह एक संदेश देने जा रहे हैं और मुख्य रूप से बहुत नकारात्मक प्रतिक्रिया देंगे।

अब, धर्मशास्त्रीय दृष्टि से पवित्रशास्त्र के पूरे सार को देखते हुए, मुझे लगता है कि हमें यह कहना होगा कि यह यशायाह के शब्दों का परिणाम होगा। वह लोगों को परमेश्वर को जानने नहीं देगा। और लोगों के लिए उसकी घोषणा का परिणाम उनके हृदय की कठोरता और सत्य की अस्वीकृति होगा।

संक्षेप में, वे अपनी हठधर्मिता में और भी अधिक दृढ़ हो जाएंगे। यशायाह के उपदेश का उद्देश्य ऐसा करना नहीं था। बल्कि इसका परिणाम यह है कि लोगों के दिल और अधिक अंधे हो जाते हैं।

यशायाह के उपदेश ने हृदय की कठोरता को उत्पन्न नहीं किया। यीशु के दृष्टान्तों की तरह, इसने केवल इसे उजागर किया। यीशु के दृष्टान्त और यशायाह का कार्य बहुत समान थे।

जो लोग यशायाह के संदेश को ग्रहण करने के लिए तैयार नहीं हैं, उनके लिए यह सत्य अप्राप्य है। वे इसे खोजने या इसका जवाब देने वाले नहीं थे। और यशायाह यहाँ केवल सत्य को सामने रख रहा है, यह भविष्यवाणी कि वे इस बात को नहीं समझेंगे और वे इसे समझ नहीं पाएँगे।

उनके दिल कठोर हो जाएँगे, और उनकी आँखें सुस्त हो जाएँगी। और इसलिए, यह प्रतिक्रिया परमेश्वर को दिखाई देती है। और बुराई या प्रतिक्रिया की कमी या हठ या अंधापन, जबकि एक विरोधाभास है, मनुष्य के दिल से आता है।

निश्चित रूप से, हम परमेश्वर पर बुरे इरादे का आरोप नहीं लगा सकते। फिर से, हमारा काम, इस्राएल के भविष्यवक्ताओं की तरह, परमेश्वर की खुशखबरी की घोषणा करना है। उस वचन पर कैसी प्रतिक्रिया दी जाती है, इसका मानव हृदय से बहुत कुछ लेना-देना है।

बेशक, भविष्यवक्ता को ऐसा वचन सुनने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाएगा कि उसकी सेवकाई एक लोकप्रिय सेवकाई नहीं होगी। और इसलिए, वह पद 11 में एक प्रश्न के साथ चिल्लाता है। यह अंधापन, हठ, कठोरता, सुनने की मंदता कब तक रहेगी? यह कब तक जारी

रहेगा? और इसका उत्तर आगे की आयतों में प्रतीत होता है जब तक कि लोगों को यहूदा से, यरूशलेम से बाहर नहीं निकाल दिया जाता।

आगे क्या हुआ, इस पर गौर करें। शहर तबाह हो गए और उनमें कोई नहीं रहा। घर वीरान हो गए और खेत बर्बाद और तबाह हो गए।

जब तक कि प्रभु सभी को दूर न भेज दें और भूमि पूरी तरह से त्याग न दी जाए। और जबकि यहाँ भाषा, शायद कुछ हद तक, अतिशयोक्तिपूर्ण है, क्योंकि अगर यह 586 है जो उसके दिमाग में है, तो यह बहुत अच्छी तरह से नबूकदनेस्सर के तहत यरूशलेम को उखाड़ फेंकना हो सकता है। निश्चित रूप से, कुछ लोग थे जो भूमि में अंगूर के बागों की देखभाल करने के लिए छोड़ दिए गए थे, जैसा कि हम जानते हैं, जैसा कि शास्त्र कहते हैं, यम हारेत्ज़, भूमि के लोग।

लेकिन भाषा कहती है कि सभी को बहुत दूर ले जाया जाएगा, सिवाय, फिर वह इसे योग्य बनाता है, दसवां हिस्सा बच जाता है। और यहाँ, वह अवशेष विषय का परिचय देता है। एक जीवित अवशेष होगा।

चाहे लोग कितनी भी बार नष्ट होते दिखें, चाहे 701 में, यशायाह के जीवनकाल में, सन्हेरीब यरूशलेम के दरवाज़े पर दस्तक देगा और यहूदा के 46 दीवार वाले शहरों को साफ कर देगा, या अन्य हमले, और विशेष रूप से मेरे, नबूकदनेस्सर के हमले में, फिर भी परमेश्वर एक बचत अवशेष को सुरक्षित रखने जा रहा था, एक जीवित अवशेष जो यहूदा में बचा रहेगा। जिस तरह से वह इसके बारे में बात करता है वह यह है कि जब बांज और ओक को काटा जाता है तो वे स्टंप छोड़ देते हैं, इसलिए पवित्र बीज भूमि में स्टंप होगा। दूसरे शब्दों में, वहाँ केवल कुछ ही वफादार लोग होंगे।

टूट में जीवन होता है, और शाखाओं को काटने के बाद भी परमेश्वर उसमें से फिर से जीवन निकाल सकता है। हम उस बागवानी रूपक पर वापस आएँगे जब हम उस शाखा के बारे में बात करेंगे जो जेसी के टूट से निकलती है, जो यशायाह की भविष्यवाणी का हिस्सा है, या वह धर्मी शाखा जिसके बारे में यिर्मयाह बात करता है। और इसके मसीहाई निहितार्थ हैं।

तो, यह बचे हुए लोगों की परिस्थितियों का वर्णन करता है, शायद कैद से लौटने के बाद। राष्ट्र एक पुनर्जीवित प्रक्रिया से गुजरेगा। यह पूरी तरह से मरा हुआ नहीं था।

इसमें एक अवशेष शामिल होगा। और इसलिए, यशायाह के अपने बच्चे का नाम, जो अगले ही अध्याय में आता है, शार्याशूब, एक अवशेष, वापस आएगा। एक धर्मी अवशेष के माध्यम से परमेश्वर के कार्य करने का यह विषय पवित्रशास्त्र का एक प्रमुख विषय है।

अब मैं भविष्यवाणी के शुरुआती अध्याय पर जाना चाहूँगा, जो वास्तव में परमेश्वर द्वारा अपने लोगों पर लगाए गए कठोर आरोपों की एक तस्वीर है। खास तौर पर, यहूदा के लोगों की। और जबकि अध्याय 1 की भाषा, कुछ मायनों में, भविष्यवाणी की भाषा के रूप में अयोग्य है, कभी-कभी अपने वर्णन में अतिशयोक्तिपूर्ण और अतिशयोक्तिपूर्ण है, यह इस बारे में एक तस्वीर है कि परमेश्वर कैसा महसूस करता है।

और जैसा कि आप हेशेल को पढ़ रहे हैं, और परमेश्वर की करुणा के बारे में कुछ जानते हैं, वह कितनी तीव्रता से और व्यक्तिगत रूप से परवाह करता है, और अपने लोगों की स्थिति से कितना प्रभावित होता है। और यह राष्ट्र, जो विद्रोही रहा है, इस पूरे पहले अध्याय में, इसकी पापी स्थिति का वर्णन और विश्लेषण किया गया है। पुस्तक उस अभिव्यक्ति के साथ शुरू होती है, यहूदा और यरूशलेम के बारे में दर्शन।

दर्शन का प्रयोग हमेशा भविष्यसूचक दर्शन के अर्थ में नहीं किया जाता है, जैसा कि हमने आमोस, पाँच दर्शनों, या यहजेकेल के चित्र, सूखी हड्डियों के दर्शन में देखा। लेकिन यहाँ इसका प्रयोग सामान्य रूप से रहस्योद्घाटन के लिए किया गया लगता है। हमारी सबसे गलत समझी जाने वाली कहावतों में से एक है नीतिवचन 29:18, हत्ज़ोन, दर्शन के लिए शब्द, जहाँ दर्शन नहीं होता, वहाँ लोग नष्ट हो जाते हैं।

इसका मतलब है भविष्यसूचक रहस्योद्घाटन। इसके बाद वह पंक्ति आती है जहाँ टोरा को नज़रअंदाज़ किया जाता है, और लोग बेकाबू हो जाते हैं। दूसरे शब्दों में, जब लोग ईश्वर द्वारा दिए गए रहस्योद्घाटन को नज़रअंदाज़ करते हैं, जो समाज में एक निरोधक शक्ति है, तो वे ऐसा करते हैं, और इसके परिणामस्वरूप अराजकता आती है।

इसलिए, रहस्योद्घाटन महत्वपूर्ण है, और मुझे लगता है कि इसका उपयोग यहाँ उस सामान्य अर्थ में किया गया है, न कि सटीक सचित्र प्रकार के दर्शनों में, जिनका वर्णन उस तरह से किया गया है जैसा कि हमने आमोस में देखा था। पुस्तक के आरंभ में आपको किस अन्य भविष्यवक्ता की याद आती है? यहाँ, हे स्वर्ग, हे पृथ्वी, सुनो, और प्रभु अपने लोगों पर अभियोग लगाना शुरू करता है। यह आपको किसकी याद दिलाता है? बिल्कुल मीका की तरह।

परमेश्वर यहूदा को दोषी ठहराने वाला है। भाषा बहुत मिलती-जुलती है, जैसा कि हमने मीका 6 में देखा था, जिसमें रहस्योद्घाटन, वाचा का मुकदमा, विवाद और परमेश्वर के लोगों के साथ विवाद शामिल है। और इसलिए, इस अभियोग में, मीका 6 के समान, शब्द के उस व्यापक अर्थ में, जहाँ परमेश्वर के चुने हुए लोगों को कटघरे में खड़ा किया जाता है।

और परमेश्वर इस विशेष मामले में न्यायाधीश या वादी है, और वह यहूदा को दोषी ठहरा रहा है, जो प्रतिवादी है। हमने मीका में पहाड़ियों को देखा जो यहोवा के अभियोग के जूरी और गवाह के रूप में खड़ी थीं। और यहाँ हमारे पास एक समानांतर चीज़ है जहाँ स्वर्ग और पृथ्वी, मानो सारी सृष्टि वहाँ है, सर्वशक्तिमान की बात सुनने के लिए तैयार है, जो बोलने जा रहा है।

और वे उसकी शिकायत का समर्थन करने के लिए वहाँ हैं। और परमेश्वर के लोग कई मामलों में दोषी हैं, जिसके लिए वह उन पर आरोप लगाने वाला है। पहला आरोप पद 2 में है, जहाँ वह विद्रोह शब्द का उपयोग करता है।

वे विद्रोही लोग हैं। इसलिए, यहाँ उन्होंने जो शब्द इस्तेमाल किया है वह है पाशा, और उस शब्द का अर्थ है जानबूझकर अधिकार के विरुद्ध जाना। और यह कानूनी संबंध तोड़ना है, इस अर्थ में, परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करना, परमेश्वर को गद्दी से उतारना।

और इसके बजाय, व्यक्ति का अपना अहंकार, उसका अपना स्वत्व, अब अधिकार बन जाता है। और इसलिए, यह शब्द, जिसे कभी-कभी पवित्रशास्त्र में विद्रोह के रूप में अनुवादित किया जाता है, और इस्राएल का उसकी इच्छा के अधीन न होना। ध्यान दें कि वह किस तरह से इसमें आगे बढ़ता है।

वह कहता है, मैंने बच्चों को पाला-पोसा और बड़ा किया, लेकिन उन्होंने विद्रोह कर दिया। मीका में भी यही विषय है। याद कीजिए कि उसने कैसे उन्हें मिस्र से लाने और अपने बेटों के रूप में उन्हें सभी प्रकार के अनुग्रह देने की बात कही थी?

प्राचीन इस्राएल के नेताओं के नाम याद रखें जिन्हें उसने उन्हें दिया था, मूसा और हारून। और ये उसकी कृपा के प्रकटीकरण थे। और उसने इस्राएल को पुत्रों के राष्ट्र के रूप में अपनाया, लेकिन उन्होंने उसके अधिकार के विरुद्ध विद्रोह किया।

उन्होंने समर्पण नहीं किया। फिर से, यह इस उलटे राज्य की याद दिलाता है जिसका परिचय हमें पवित्रशास्त्र में आने पर मिलता है। यह ईश्वरीय इच्छा के विरुद्ध मानवीय इच्छा की लड़ाई है।

यह परमेश्वर का राज्य है जो उसके अधिकार के प्रति समर्पण की मांग करता है। और पवित्रशास्त्र के माध्यम से हम कई तरीकों से जो लड़ाई करते हैं, हाँ, यह देवताओं की लड़ाई है, लेकिन यह इच्छाओं की लड़ाई भी है। इस्राएल के जीवन के सिंहासन पर कौन बैठेगा? सिर्फ यरूशलेम का राजा नहीं, बल्कि वे किसकी इच्छा के आगे झुकेंगे? खैर, टोरा ने दैनिक जीवन के लिए उस इच्छा को परिभाषित किया है।

फिर वह इस तथ्य के बारे में बात करता है कि इस्राएल अज्ञानी है। बैल अपने मालिक को जानता है। हे भगवान।

गधा जानता है कि चरनी के पास कौन आता है। या फिर चरनी या खलिहान के पास कौन आता है ताकि उसे खाना दे सके। इन जानवरों के बारे में भी ध्यान दें, उन्होंने दस आज्ञाओं में दो का उल्लेख किया है।

उन्हें शब्बत मिलता था, इसलिए वे समुदाय के बहुत करीब थे। बैल और गधा, जॉन डीयर, बाइबल के समय के फार्मल। ये बहुत, बहुत महत्वपूर्ण जानवर थे।

और उनमें कृतज्ञता की भावना है। वे अपने मालिकों को जानते हैं और उनकी सराहना करते हैं जो उनके स्टालों की सफाई करते हैं, उनकी देखभाल करते हैं और उन्हें खाना खिलाते हैं। लेकिन इज़राइल को नहीं पता या स्वीकार नहीं है कि यह कौन है।

इसलिए, वह इस शब्द के साथ सामने आता है: मेरे लोग नहीं समझते। यशायाह की पुस्तक में 23 स्थानों में से पहला स्थान जहाँ स्नेह के लिए अमी, मेरे लोग, शब्द का प्रयोग किया गया है। तीसरी चिंता जो उसे है वह पद 4 में पाई जाती है, जहाँ इस्राएल ने परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते में विश्वासघात किया है।

और पद 4 में, वह पैरानोमेसिया से शुरू करता है। हमने पहले पैरानोमेसिया को आमोस के एक दर्शन में देखा था। कायितेज़ और केटेज शब्दों पर खेलते हैं।

पैरानोमेसिया। वह पद्य 4 की शुरुआत कैसे करता है? वह इसे होई गोय से शुरू करता है। होई गोय।

होई यहूदी या कभी-कभी हम यिडिश शब्दावली का हिस्सा होने के नाते गहरी भावना और अभिव्यक्ति के लिए इस्तेमाल होने वाले महान अपशब्दों में से एक है। इस शब्द का एक शब्द में अनुवाद करना मुश्किल है। ऐसे शब्द जो भावना व्यक्त करते हैं।

अफसोस, या दुख, या ऐसा ही कुछ। गोय का मतलब है राष्ट्र। तो, होई गोय।
अफसोस, राष्ट्र। इसे हम हिब्रू में बूगी वूगी निर्माण कहते हैं। होई गोय।

ओई वे, आपने पहले भी सुना है, है न? जिसका यिडिश में मतलब है, ओह, दर्द। तो, आप इसका अनुवाद कर सकते हैं, ओह, राष्ट्र। तो, ओई गावल्ट।

ओह, शक्तियाँ। गावल्ट एक यिडिश शब्द है जो जर्मन से आया है। हाँ।

हाँ, मुझे आपकी टिप्पणी पसंद आई। जब वे एक राष्ट्र थे, जैसा कि हम उत्पत्ति 12 से जानते हैं, भगवान अब्राहम से कहते हैं, मैं तुम्हें एक गोय गदोल, एक महान राष्ट्र बनाऊंगा। इसलिए, इज़राइल के इतिहास में राष्ट्र शब्द का प्रयोग किया जाता है।

सिर्फ विदेशी देशों के लिए ही नहीं, बल्कि गोय का इस्तेमाल किया जाता है। अब, आधुनिक दुनिया में, गोय निश्चित रूप से एक अपमानजनक शब्द है। जब यह किसी यहूदी के होठों से किसी गैर-यहूदी के लिए निकलता है, तो इसका मतलब होता है कोई ऐसा व्यक्ति जो असंवेदनशील है, आमतौर पर यहूदी-विरोधी।

यह एक अपमानजनक, नकारात्मक शब्द है। कोई ऐसा व्यक्ति जो हृदयहीन हो। इस विशेष मामले में, वह उस शब्द, राष्ट्र का उपयोग करते हुए सभी को शामिल कर रहा है।

वह उन्हें पापी कहता है। यह पापी शब्द हमारा मित्र हैटा है, जिसका सही अर्थ है कि वे लक्ष्य से चूक गए हैं, वे भटक गए हैं, जो ग्रीक न्यू टेस्टामेंट में हामार्टानो के काफी करीब है, जो, उदाहरण के लिए, रोमियों में, पाप के अपने तरीके से जाने के परिणाम के बारे में बात करता है। और इसलिए, जीवन में ईश्वर के लक्ष्य से चूकना, रास्ते से भटक जाना, भटक जाना, गलत दिशा में मुड़ जाना, यहाँ एक सहभागी रूप का उपयोग करता है, संभवतः एक निरंतर प्रकार की कार्रवाई के विचार को दर्शाता है।

वे लोग अपराध बोध से भरे हुए हैं, बुरे लोगों की जमात है, भ्रष्टाचार में लिप्त बच्चे हैं। यहाँ उन्होंने सारी हदें पार कर दीं। जब वे भ्रष्टाचार शब्द का इस्तेमाल करते हैं, तो यह वास्तव में विकृत, टेढ़ा शब्द होता है।

और इसलिए, यदि धार्मिकता परमेश्वर की सटीकता और सीधापन और शुद्धता है, जिसे हम यूनानी दुनिया में रूढ़िवादी, सीधे या सही सोच कहते हैं, तो इस्राएल टेढ़ा और विकृत और विकृत है। इस मूल शब्द एवन का सही अर्थ है एक मानक, एक सीधे मानक से झुका हुआ होना। और इसलिए, इस्राएल, जैसा कि हमने आमोस में साहुल रेखा को देखा, गिर गया है और यहाँ अपने स्वयं के विनाश पर तुला हुआ है।

पद 4 में हम पहली बार इस अभिव्यक्ति से परिचित होते हैं, इस्राएल का पवित्र। जैसा कि मैंने पहले बताया; इसका इस्तेमाल अक्सर उन लोगों द्वारा तर्क के लिए किया जाता है जो इस पुस्तक की एकता को मानते हैं कि आमोस के पुत्र यशायाह ने पूरी भविष्यवाणी लिखी थी क्योंकि यह अनूठी अभिव्यक्ति यशायाह 1-39 के बीच समान रूप से वितरित की गई है, जहाँ यह 14 बार आती है और यशायाह 40-66। मुझे इसे फिर से लिखने दें।

यशायाह 1-39 में इसका 12 बार और यशायाह 40-66 में 14 बार इस्तेमाल किया गया है। इसलिए, यह बहुत समान रूप से वितरित है। और निश्चित रूप से, जहाँ यशायाह की भविष्यवाणी के बाहर इसका केवल 5 बार उपयोग किया गया है, यह निश्चित रूप से उनके प्रमुख शब्दों में से एक है।

इस बारे में बात करते हुए, हमने अभी अध्याय 6 में देखा कि कौन अपनी सृष्टि से अलग है। और खास तौर पर इस पापी सृष्टि से, जहाँ वह स्पष्ट रूप से खुद को दूर रखता है क्योंकि उन्हें अपने सृष्टिकर्ता की तरह पवित्र लोग होने के लिए बुलाया गया है। लेकिन उन्होंने उससे मुंह मोड़ लिया है।

फिर, पद 5 में, जब वह अपने अभियोग को जारी रखता है, तो वह इस्राएल को एक पुरस्कार विजेता योद्धा के रूप में वर्णित करता है, जिसके शरीर के हर हिस्से पर मार-पीट की गई है। हर जगह घाव और खरोंच हैं। घाव, सड़ते हुए घाव।

और बाहर से, इसराइल को पीटा गया है। उसका सिर घायल है। और अंदर से, उसका दिल।

तो, बाहर और भीतर। सिर और दिल। आप इसे समानांतर रूप में देखते हैं।

शरीर में कोई स्वस्थता नहीं रह जाती। हम कभी-कभी अंग्रेज़ी में यह मुहावरा सुनते हैं, आपके सिर के ऊपर से लेकर आपके पैर के नीचे तक। खैर, यह पवित्रशास्त्र में यही आता है।

आपके सिर के मुकुट से लेकर आपके पैर के तलवे तक। तो, वह कह रहा है कि पूरा व्यक्ति प्रभावित है। केवल घाव और घाव और खुले घाव, जिन्हें साफ नहीं किया जाता, पट्टी नहीं बांधी जाती या तेल से आराम नहीं दिया जाता।

मुझे संदेह है कि इसकी सबसे लोकप्रिय आधुनिक छवि मेल गिब्सन की यीशु की तस्वीर है, जिसमें वे मसीह के जुनून में रोमन सैनिकों के साथ व्यवहार का अनुभव कर रहे हैं, जहाँ आप एक मानव शरीर को लगभग उतना ही खून से लथपथ, घायल और पीटा हुआ देखते हैं जितना

आप कल्पना कर सकते हैं। बेशक, यशायाह 53, श्लोक 4 और 5, जो मेल गिब्सन की फिल्म के लिए प्रेरणा बन गए, जो यशायाह के एक उद्धारण के साथ शुरू होता है। यशायाह 54 में, 53 यशायाह 53, श्लोक 4 और 5 का जिक्र करते हुए, जो उनकी फिल्म के लिए प्रेरणा थे, निश्चित रूप से उन्होंने हमारी दुर्बलताओं को उठाया, वे ईश्वर द्वारा पीड़ित थे, उनके द्वारा मारे गए, हमारे अपराधों के लिए छेदे गए, हमारे अधर्म के लिए कुचले गए।

और हमें शांति देने वाला दण्ड उसी पर था, और उसके घावों से हम चंगे हो गए। तो, अध्याय 53 में पीड़ित सेवक की छवि। अब, एक और पीड़ित सेवक है।

इस्राएल का अर्थ है एबेद-याहवे। यह भाषा केवल यीशु पर ही लागू नहीं होती। लेकिन यशायाह की भविष्यवाणी में, परमेश्वर के लोग स्वयं, जो सामूहिक रूप से एक पीड़ित सेवक हैं।

नये नियम के लेखक, बेशक, पीड़ित सेवक की छवि पर ध्यान केंद्रित करते हैं और इसे विशेष रूप से एक व्यक्ति पर लागू करते हैं। लेकिन इस्राएल को परमेश्वर का सेवक कहा जाता है। और वह बहुत ही दुखद स्थिति में है।

उसके शरीर पर चोट, घाव, कमजोरी और घाव हैं। आयत 6 की अंतिम पंक्ति कहती है, इस्राएल के घाव तेल से नरम नहीं हुए। बाइबल में तेल के तीन या चार मुख्य उपयोग क्या हैं? ठीक है, इसका उपयोग औपचारिक उद्देश्यों के लिए किया जाता है।

आपको तेल उपचार मिलता है। आपके पास शमूएल को शेमिन का सींग, जैतून का तेल लेते हुए दिखाया गया है। मैं शेमिन इसलिए कहता हूँ क्योंकि जब आप गेथसेमेन शब्द सुनते हैं, जो जैतून के प्रेस का स्थान है, तो आप शेमिन शब्द सुनते हैं, जो हिब्रू बाइबिल में तेल के लिए शब्द है।

और गेथसेमेन के बगीचे में वे महान, आदरणीय, पुराने जैतून के पेड़ हैं। अभिषेक के अलावा तेल का और क्या उपयोग किया जाता था? किस लिए? ठीक है, मंदिर में मेनोराह इसी तरह काम करता था। सात शाखाओं वाले कैंडेलब्रम के लिए तेल होना चाहिए था।

शेमिन। पुराने नियम के समय में तेल का इस्तेमाल किसी और जगह भी किया जाता था? यह अच्छे सामरी की कहानी में कैसे आया? ठीक है, और यह हमारे यहाँ जो है, उससे मिलता-जुलता है, तेल से घावों को ठीक करना। इसका इस्तेमाल औषधीय उद्देश्यों के लिए किया जाता था।

घावों पर तेल लगाना। प्राचीन इस्राएल में हर घर में रात भर तेल का इस्तेमाल किया जाता था। कैसे और कहाँ? बचपन में, क्या आपके कमरे में कभी नाइटलाइट थी? ठीक है, आमतौर पर घर में रात भर तेल के दीये जलते रहते थे।

अब्राहम के दिनों के चार-झूले से शुरू करते हैं। निश्चित रूप से, यशायाह के दिनों में। एक झूटे वाला, लेकिन दीपक खुला था।

यह एक तश्तरी की तरह था, जिसके किनारे थोड़े गोल थे, किनारे थोड़े मुड़े हुए थे, और उसमें एक बाती लगी हुई थी। तो, तेल का इस्तेमाल दीपक जलाने के लिए किया जाता था। श्रीमती इसायाह हर दिन तेल का इस्तेमाल कैसे करती थीं? हाँ, खाना पकाने के लिए।

यह सही है। वह आज जिसे हम मक्खन कहते हैं, उसका इस्तेमाल कई तरह की चीज़ों के लिए करती थी। तेल बहुत ज़रूरी था।

जैतून का पेड़। शवों को तैयार करना? मुझे ऐसा नहीं लगता। कभी-कभी शवों को मसालों से अभिषेक किया जा सकता है क्योंकि खास तौर पर शवों की गंध बहुत अच्छी होती है।

मुझे नहीं लगता कि शव केवल घावों के लिए थे, लेकिन एक बार भी कोई मृत नहीं था। अब जब आप भूमध्यसागरीय दुनिया के जैतून उद्योग को समझते हैं, तो रोम या इटली बाइबिल की दुनिया का सबसे बड़ा जैतून उत्पादक है। तो, जब पॉल रोमियों 11 में इज़राइल के जैतून के पेड़ होने के रूपक के बारे में लिखता है तो क्या करता है? और वह भूमध्यसागरीय दुनिया के सबसे बड़े जैतून उत्पादक देश रोम को अपना पत्र लिखता है।

वैसे, ग्रीस और स्पेन भी जैतून के प्रमुख उत्पादक हैं। अब जाहिर है कि इज़राइल में इसका कुछ हिस्सा है, मिस्र में इसका थोड़ा हिस्सा है, लेकिन यह अर्थव्यवस्था के लिए बहुत महत्वपूर्ण था। आपका देश उजाड़ है, श्लोक 7, आपके शहर आग से जल गए हैं, आपके खेतों को विदेशियों द्वारा छीना जा रहा है, ठीक उसी तरह जैसे आप बर्बाद हो गए थे जैसे कि अजनबियों द्वारा उखाड़ फेंका गया था।

यहूदा की यह भूमि विदेशियों के आक्रमण का अनुभव करने जा रही है और इसे नष्ट कर दिया जाएगा। फिर वह इन लोगों को इस दिलचस्प शब्द से संबोधित करता है: सियोन की बेटी। यह स्पष्ट रूप से यरूशलेम का पर्यायवाची है, लेकिन सियोन की बेटी।

बाइबल के समय में शहरों को आम तौर पर स्त्रीलिंग में संदर्भित किया जाता था। शहर शब्द, कान, स्वयं स्त्रीलिंग है। लेकिन यह बेट सियोन है, सियोन की बेटी।

संभवतः कोमलता की अभिव्यक्ति। चाहे वह बेन हो या बेट, बेटा हो या बेटी, इसका इस्तेमाल अक्सर किसी श्रेणी या समूह से संबंधित होने के संबंध में किया जाता है। इसलिए, यह यरूशलेम के लोगों को संबोधित करने का एक तरीका है, शायद एक कोमल तरीके से, जो इस खूबसूरत शहर से संबंधित हैं।

और इसी तरह इसे वर्गीकृत किया गया है। और फिर भी यह शहर अंगूर के बाग में एक आश्रय की तरह, शाखाओं और पत्तियों से बने एक अस्थायी झोपड़ी की तरह, या खरबूजे या खीरे के खेत में एक झोपड़ी की तरह, घेराबंदी के तहत एक शहर की तरह छोड़ दिया जाएगा। अगर सर्वशक्तिमान भगवान ने कुछ बचे हुए लोगों को नहीं छोड़ा होता, तो हम सदोम की तरह हो जाते, और हम गोमोरा की तरह होते।

फिर से, हम अवशेष विषय पर वापस आते हैं। सदोम और अमोरा पवित्रशास्त्र में पर्याय बन गए। इसलिए, समुदाय में, यरूशलेम के लोगों के विश्वास का मौखिक संचरण अब अब्राहम के समय तक वापस याद आता है, जो एक सहस्राब्दी से अधिक था।

और अगर हम अब्राहम को 1900 के आसपास, संभवतः एक या दो शताब्दी बाद का मानते हैं, तो विद्वान इस पर एकमत नहीं हैं, लेकिन हम यशायाह को 8वीं शताब्दी का मान रहे हैं। तो, 18वीं शताब्दी से 8वीं शताब्दी तक, यह एक सहस्राब्दी है। जब ये दो शहर, सदोम और अमोरा, आग और गंधक से तबाह हो गए थे, तब कोई अवशेष नहीं बचा था।

वास्तव में, आज तक, शहर इतने पूरी तरह से नष्ट हो चुके हैं कि पुरातत्वविदों को अभी भी यह पता लगाना बाकी है कि वे शहर कहाँ हैं। शायद इन शहरों का विनाश किसी बड़े ज्वालामुखी के कारण हुआ हो। हम अभी नहीं जानते।

लेकिन यह प्रभु ही है जो बचे हुए लोगों को छोड़ देता है। यह केवल उसकी कृपा के कारण ही है कि वे सदोम और अमोरा जैसे नहीं बने। फिर से, पवित्रशास्त्र का एक विषय यह है कि परमेश्वर हमेशा मात्रा से ज़्यादा गुणवत्ता के बारे में चिंतित रहता है।

वह बचे हुए लोगों के साथ काम करता है। यीशु की सेवकाई को बुरा माना जाता। कुछ आधुनिक मानकों के अनुसार तीन साल की सेवकाई के बाद 120 लोग।

फिर भी उन 12 में से 11 लोग शहादत देकर मरने को तैयार थे। वे भी उनके अनुयायियों की तरह ही उनकी शिक्षाओं पर गहराई से विश्वास करते थे। इसलिए, परमेश्वर ने हमेशा एक बचे हुए विचार के माध्यम से काम किया है।

यह दिलचस्प है कि कैसे, रोमियों 9:29 में, इस आयत को इस अवशेष विषय में उठाया गया है जिसमें आप और मैं शामिल हैं, चाहे आप मानें या न मानें। सिर्फ यहूदी अवशेष ही नहीं, बल्कि पौलुस ने गैर-यहूदी विश्वासियों के संदर्भ में इसका अर्थ विस्तृत किया है। तो, रोमियों 9:29 यह वैसा ही है जैसा कि यशायाह ने पहले कहा था, अगर सर्वशक्तिमान प्रभु ने हमें वंशज नहीं छोड़ा होता, तो हम सदोम की तरह बन जाते, और हम अमोरा की तरह बन जाते।

इस धार्मिक अवशेष में, परमेश्वर का बुलावा विश्वास करने वाले यहूदियों और अन्यजातियों दोनों को शामिल करता है। और अगला पद कहता है, तो फिर हम क्या कहें? कि जो अन्यजाति धार्मिकता का पीछा नहीं करते, उन्होंने उसे प्राप्त कर लिया है, अर्थात् धार्मिकता जो विश्वास से है। इसलिए, अवशेष विषय वे हैं जो विश्वास से जीते हैं।

आज मैं जो आखिरी बात कहना चाहता हूँ, वह है हृदयहीन उपासना की पाखंडपूर्णता का अर्थहीन होना। पद 5 से शुरू करते हुए यरूशलेम के ये लोग, क्योंकि उन्होंने सदोम और अमोरा की तरह दुष्टता से काम किया था, उन्होंने परमेश्वर के रहस्योद्घाटन से मुंह मोड़ लिया था। वे अभी भी बाहरी तौर पर धार्मिक कार्य कर रहे थे। वह यहाँ मेढ़ों की होमबलि, मोटे जानवरों की चर्बी के बारे में बात करता है।

मुझे बैलों, भेड़ों और बकरियों के खून से कोई खुशी नहीं है। यह हमें फिर से मीका 6 की ओर ले जाता है, है न? अनुष्ठान को अस्वीकार करता है, समारोहों को अस्वीकार करता है। आप क्या सोचते हैं? मैं बस बलि प्रणाली की तीव्रता चाहता हूँ।

वह कहते हैं, जब तुम मेरे सामने आते हो, तो मेरे दरबार में यह सब रौंदना क्या है? शायद, लोग आ रहे हैं, पवित्र परिसर को भर रहे हैं, लेकिन यह देवता का अपमान है। क्योंकि वे केवल अर्थहीन भेंट ला रहे हैं, उनका दिल बाहरी समारोह के साथ तालमेल नहीं रखता है। और इसलिए, वह कहते हैं, ये अर्थहीन भेंट लाना बंद करो।

फिर से, यशायाह अब एक मोड़ लेता है, जो यीशु की शिक्षा में प्रमुख विषय नहीं तो एक बड़ा विषय बन जाता है। यीशु बाहरी धर्म के लिए नहीं जाते हैं। यीशु आमतौर पर दिल की ईमानदारी, क्षमा की कमी, आंतरिक चीजों, प्रेम की कमी, भाईचारे की कमी के बारे में बात करते हैं, भगवान से प्यार करने के सवाल का जवाब देते हैं।

यीशु ने नियमों या विनियमों, अनुष्ठानों या समारोहों को और अधिक तीव्र करने का आह्वान नहीं किया। और इसलिए यशायाह नए चाँद, सब्त और पवित्र सम्मेलनों के बारे में बात करता है। परमेश्वर कहता है, मेरी आत्मा इन चीजों से घृणा करती है।

वे मेरे लिए बोझ बन गए हैं। मैं उनसे तंग आ चुका हूँ। भले ही तुम प्रार्थना में अपने हाथ फैलाओ, मैं अपनी आँखें छिपा लूँगा।

मैं वास्तव में आपके प्रति अनुकूल दृष्टि से नहीं देखूँगा क्योंकि आपके हाथ खून से भरे हुए हैं। मेरा एक मित्र है जिसने ईसाई-यहूदी संबंधों के इतिहास पर एक किताब लिखी है। और उसने अपनी किताब के शीर्षक के लिए इस शब्द का इस्तेमाल किया है, हाथ खून से भरे हुए हैं।

ऐतिहासिक रूप से, चर्च द्वारा यहूदी लोगों पर की गई हिंसा एक अलग विषय है। लेकिन यहाँ, इस्राएल के हाथ खून से भरे हुए हैं। यानी, वे गलत काम करने के दोषी थे।

और इसलिए, उन खून से सने हाथों के साथ कुछ करने का आह्वान किया जाएगा। अगली कक्षा में हम जो आह्वान करेंगे, वह उन हाथों को साफ करने की ओर होगा। और आज के लिए बस इतना ही।

यह डॉ. मार्व विल्सन द्वारा भविष्यवक्ताओं पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 27, यशायाह के चुनिंदा अंश, भाग 2 है।